3875011

कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के ... भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

विषय ......Hindi......

परीक्षा का दिन......Tuesday......

दिनांक ......12/3/24......

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	4
2	6	20	4
3	6	21	
4	6	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	4	30	
13	4	31	
14	3	योग	79½
15	3	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	3½	अंकों में	शब्दों में
17	4	80	अस्सी
18	6		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक ☐☐☐☐☐

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है।175/2023

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटे।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटे।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

उत्तर क्रमांक - 1

(i) (ब) इया

(ii) (अ) रमेश

(iii) (ब) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(iv) (द) अवधी

(v) (अ) उद्धव

(vi) (अ) बिहार

(vii) (अ) चश्मे वाला

(viii) (अ) यशपाल

(ix) (स) रेखाचित्र

(x) (ब) सभ्यता

(xi) (स) इज्जत का

(xii) (ब) देहाती दुनिया

12

BSER-475/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर क्रमांक - 2

(i) किसी भाव, अवस्था, गुण अथवा दशा के नाम को 'भाववाचक' संज्ञा कहते है।

(ii) वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते है, उन्हे 'विशेषण' कहते है।

(iii) वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता, उसे 'अकर्मक' क्रिया कहते है।

(iv) वे 'अव्यय' शब्द, जो दो शब्दो, वाक्यांशो या वाक्यो को जोडते है, उन्हे समुच्चयबोधक' अव्यय कहते है।

6

(v) वे शब्दांश जो किसी शब्द के पूर्व में 'अन्त' में लगाकर नये अर्थ का बोध करवाते है, उन्हे प्रत्यय कहते है।

(vi) हिन्दी में उपसर्ग 'तीन' प्रकार के होते है।

उत्तर क्रमांक - 3

(i) प्रस्तुत गद्यांश का शीर्षक 'देशभक्ति की भावना' है।

6

(ii) वर्तमान में नवयुवकों की आवश्यकता है जो अपने आप में, अपनी शक्ति में विश्वास करते हो।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) भारत के राष्ट्रीय आदर्श त्याग और सेवा को अपनाकर गरीबों, भूखों और पीड़ितों की सेवा में अपने आप को अर्पित करना ही राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा है।

(iv) विवेकानन्द के उपदेश का ध्येय वाक्य है, 'उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये

(v) राष्ट्रभक्ति की भावना का आधार दूसरों के प्रति प्रेम और विवेक के व्यवहार को माना गया है।

(vi) 'आस्तिक' शब्द का विपरीतार्थक शब्द 'नास्तिक' है।

उत्तर क्रमांक - 5

(i) इस पद्यांश का शीर्षक 'मानव की छिपी हुई शक्ति' है।

(ii) आदमी के मग में जग में हो रहे विघ्न नहीं टिक सकते अर्थात वह उनका सामना नहीं करा है।

6

(iii) जब मानव अपनी आन्तरिक इच्छा को प्रबल कर मेहनत करता है, तब पत्थर भी जल बनकर बहने लगते है।

(iv) जो व्यक्ति जीवन में कठिन परिश्रम नहीं करता अर्थात जीवन बिना संघर्ष के जीना चाहता है। ऐसा व्यक्ति कभी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। अर्थात रोशनी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(v) पर्वत के पाँव जब उखड़ते है जब कोई व्यक्ति प्रबल इच्छा से परिश्रम को करता है। तब पर्वत जैसी कठिनाइयाँ भी अपने आप उखड़ व समाप्त हो जाती है।

(vi) मेंहदी के बीच एक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का परिश्रम छिपा है और उसी परिश्रम के कारण वह अपनी सफलता की रोशनी को प्राप्त किया है।

खण्ड - ब

उत्तर क्रमांक - 5

2

डुमराँव प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँन की जन्मभूमि है। यहाँ शहनाई में डलने वाली रीड को बनाया जाता है। डुमराँव में सोन नदी के किनारे नरकट नामक घास मिलती है। जिसके उपयोग से ही शहनाई की रीड बनाई जाती है। इसी कारण शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए उपयोगी है।

उत्तर क्रमांक - 6

2

हालदार साहब ने जब नेताजी की मूर्ति को पहली बार देखा तो उनकी दृष्टि में यह बात खटकने लगी की किसी ने इतनी सुंदर मूर्ति बनाई परंतु वह इस मूर्ति

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

को चश्मा बनाना किस प्रकार भूल गया और प्रतिदिन चश्मे को बदलते देखे उन्होंने उस मूर्ति के विषय के बारे में जानकारी लेना शुरू कर दिया और अंत में पता चला कि मूर्ति कस्बे के टीचर 'मोतीलाल' ने बनाई थी।

उत्तर क्रमांक - 7

2

जब कवि लम्बे समय के पश्चात अपने घर को लौटता है। तब वह अपने पुत्र की दंतुरित मुस्कान से मुग्ध हो उठता है। तब उसके मन में अलग-2 भाव उमडने लगते है। वह कहता है कि हे पुत्र। तुम्हारी दंतुरित मुसकान एक मृतक में भी प्राणों का संचार कर सकती है। और तुम्हारा यह धूल से सना शरीर ऐसा लग रहा है जैसे खिला हो कमल मेरी आँगन में और तुम्हारी यह मुस्कान देखकर मेरा निरस जीवन भी अब खिल-सा गया है।

उत्तर क्रमांक - 8

2

'उत्साह' एक आवाहन व संदेश पर कविता है। कवि ने इस कविता के माध्यम से नवचेतना रचनात्मक क्रान्ति का संदेश देना चाहा है। कवि ने अपने संदेश का माध्यम बादलों को माना है। कवि बादल से कहता है कि तुम अज्ञात दिशा से आकर पूरे आकाश में छा जाओ और गर्जन-तर्जन से समाज में फैली भीषण अशान्ति, भूख, शोषण आदि को समाप्त कर लोगों को 'नवजीवन' प्रदान करो।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर क्रमांक - 9

लेखिका ने जब गैंगटॉक शहर को देखा तो उनको अनुभूति हुई कि इस शहर के लोगों बड़े ही 'मेहनती' व 'परिश्रमी' होने के साथ साथ व्यवहार में भी कुशल है। परन्तु जब लेखिका ने वहाँ की महिलाओं को कार्य करते हुए देखा तो लेखिका के दिल को एक गहरी ठेस पहुँची जिसके कारण उसने उन महिलाओं के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए उनसे बात की तथा उनसे उनके व्यवहारिक जीवन के बारे में जाना।

2

उत्तर क्रमांक - 10

जैसे ही भोलानाथ और उसके साथी ने चूहे के बिल में पानी डाला तो अचानक उस बिल से एक साँप बाहर आ गया। साँप को देखकर सभी दोस्त भयभीत हो गये साथ ही तेज गति से अपने-अपने घर को भाग गए। भोलानाथ तो आते ही अपनी माता के आँचल में शरण ली साथ ही माता को हादसे व उसकी शरारत के बारे में बताया। इससे यह पता चलता है कि एक बालक जो सदैव अपने पिता के साथ रहता है। परंतु संकट के समय माता के आँचल में शरण लेता है।

2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर क्रमांक - 11

'नमक-मिर्च लगाना' : भड़काना

वाक्य प्रयोग :
जब सुरेश के पिताजी ने उसे मारा तब उसकी माता सुरेश के प्रति नमक-मिर्च लगा रही थी।

(2)

उत्तर क्रमांक - 12 [खण्ड - स]

(i) आग के अविष्कार में कदाचित पेट की ज्वाला की प्रेरणा ही कारण रही होगी।

(ii) सुई-धागे के अविष्कार में शायद शीतोष्णा से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृति रही ही कारण बनी होगी।

(4)

(iii) खुले आकाश के नीचे सोए व्यक्ति को नींद इसलिए नहीं आती क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है।

(iv) वास्तव में संस्कृत मानव पेट भरा और तन ढँका होने पर भी निठल्ला नहीं बैठ सकता। वह सदैव किसी नए तथ्य की खोज करता रहेगा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर क्रमांक - 13

(i) गोपियों ने उद्धव को व्यंग्य करते हुए बड़भागी अर्थात भाग्यशाली कहा है।

(ii) गोपियाँ उसको बड़भागी व्यंग्य में इसलिए कहती है क्योंकि वह सदैव श्रीकृष्ण के समीप रहकर भी उनके प्रेम के बंधन से सदैव मुक्त रहा है।

(iii) गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करती हुई कहती है कि तुम उस कमल के पत्ते के समान हो जो जल के भीतर रहकर भी जल से अछूता है।

(iv) जब तेल की गागरि को जल में डुबोया जाता है। तब जल की एक भी बूंद उस पर नहीं ठहरती अर्थात वह जल पूर्णतया अछूती है।

4

उत्तर क्रमांक - 14

हालदार साहब ने जब देखा कि नेताजी की मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा लगा हुआ है। तो उन्हें यह अनुभव हुआ कि देश की भावी पीढ़ि में अभी भी देशभक्ती व देश के लिए प्रेम स्थित है। पहले जब उन्हें पता चला कि चश्मे वाला कैप्टान जो नेताजी की मूर्ति पर चश्मे लगाया करता था। वह अब नहीं रहा तो

3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

हृदय को बहुत ठेस पहुँची और कैप्टन के प्रति श्रद्धा के भाव में आँखो से आँसू भी बहे। लेकिन जब उन्होंने नेताजी की मूर्ति पर बच्चों द्वारा बनाया गया सरकंडे के चश्मे को देखा तो वह वहाँ भावुक हो उठे। साथ ही उनके हृदय में देशभक्तों और देशभक्ति की भावना के प्रति सम्मान और बढ़ गया। और वह उस मूर्ति को देखकर चले गए।

उत्तर क्रमांक - 15

3

"राम लक्ष्मण परशुराम, संवाद पाठ के आधार पर जब श्रीराम सीता स्वयंवर में भगवान शिव के धनुष को तोड देते है। तब परशुराम जी जो की भगवान शिव के परम भक्त वह वहाँ आ पहुँचते है। और शिव धनुष को तोडने वाले के विषय में पूछते है। तब श्री राम अपने आप को उनका दास बताते हुए कहते है कि "हे मान्यवर। आप क्रोधित न हो, इस शिव धनुष को तोडने आपका ही कोई दास होगा।" तब परशुराम जी कहते है कि "सेवक वह होता है जो सेवा का कार्य करता है, परन्तु यह कार्य किसी ने युद्ध के लिए किया है।" क्योंकि जो धनुष इस सभा में तोडा गया है वह धनुश साक्षात मेरे प्रभु भगवान शिव का है। शिव के धनुष तोडने के कार्य को ही परशुराम जी ने युद्ध का कार्य कहा है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर क्रमांक - 16 [खण्ड - द]

कवि तुलसीदास

जीवन परिचय :

(i) कवि तुलसीदास हिन्दी साहित्य में 'भक्तिकाल' के श्रेष्ठ कवि माने जाते है।

(ii) इनका जन्म उत्तरप्रदेश के 'बाँदा' जिले के 'राजापुर गाँव' में हुआ था।

(iii) इन्होने 'श्री नरहरी दास जी' से रामभक्ति का मार्ग प्राप्त किया था।

(iv) इन्होने अपने काव्य में 'अवधी' एवं 'ब्रज' दोनों भाषाओं को समान रूप से श्रेष्ठ माना है।

(v) प्रमुख रचनाएँ : इनकी रचनाओं में 'रामचरित्रमानस' इनका कीर्ति ग्रंथ माना जाता है। इसी के साथ गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका इनकी प्रमुख रचना है।

(vi) इन्होने अपने काव्य में अनुप्रास, रूपक उपमा जैसे अलंकारो का सुंदर प्रयोग किया है।

32

8

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(vii) इनके पिता का नाम 'आत्माराम दुबे' और 'माता का नाम 'हुलसी बाई' था।

(viii) कवि तुलसीदास जी ने एक आदर्श समाज की स्थापना की जिसके कारण यह एक 'समन्वयवादी' कवि है।

उत्तर क्रमांक - 17

लेखक अज्ञेय ने हिरोशिमा में तत्काल कुछ न लिखकर, भारत लौटने पर कविता इसलिए लिखी क्योंकि जब लेखक ने जापान में हुए परमाणु विस्फोट को देखा तब उसे एक थप्पड़-सा लगा और सारा दृश्य उसकी आँखों के सामने आ गया। उसने अपनी कल्पना और अनुभूति से हिरोशिमा में हुए विस्फोट का प्रत्यक्ष अनुभव कर जान लिया। परन्तु लेखक ने उसी समय कविता लिखी। परन्तु जब वह लौट रहा था। तब आन्तरिक दबाव के कारण उसने कविता को लिखना शुरू किया। लेखक ने जो भी कल्पना व अनुभूति कर जाना, उसने लौटने समय सारे दृश्य का चित्रण कर दिया। उसने बताया कि किस प्रकार वहाँ के लोगों ने परमाणु विस्फोट के कारण भीषण अभावित को संभाला साथ ही चट्टान पर बनी मानव आकृति जो कि परमाणु के कारण वह उस पर आ गई। यह सब बात लेखक ने कविता में बताया है। परन्तु यह कविता लेखक किसी बाहरी दबाव नहीं बलकि आन्तरिक दबाव के कारण लिखी

4

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

'निबंध-रचना' [उत्तर क्रमांक - 18]

'मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना'

* संकेतबिंदु :
(i) प्रस्तावना
(ii) घटना का वर्णन
(iii) घटना का अविस्मरणीय होने का कारण
(iv) उपसंहार

6

1. प्रस्तावना :
'यात्रा' एक ऐसा समय है जिसमें अपने जीवन के महत्व व मौलिक आधारों को समझता है। वैसे तो यात्राओं में बड़ा आनन्द व मजा आता है। परन्तु कई बार ऐसा होता है कि हमारी आनन्दमय यात्रा हमें कठिन में पहुँचा दे। जिसके कारण तुम वह तुम्हारे परिवार को कठिनाइयाँ उठानी पड़े। वैसे 'यात्रा' करने का कारण जीवन में होने वाली कठिनाइयाँ एवं दुखों को भुलाने या उनसे बाहर निकलने के लिए की जाती है। लोगों अपने व परिवार की खुशी के लिए वर्ष में एक से दो बार 'यात्रा' व 'घूमने' बाहर जाते हैं। जिससे परिवार के सदस्यों एवं स्वयं का जीवन निराशापूर्ण न होकर सदैव आंनदमय रहे। इसके लिए जीवन में यात्रा करना बड़ा ही महत्वपूर्ण है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

२. घटना का वर्णन :

एक बार की बात है, मैं अपने परिवार के साथ 'कच्छ' गया था। उस वहाँ पर लोगों घूमने एवं यात्रा करने के लिए आते थे। हम सब भी वहाँ का 'रणोत्सव' देखने गए थे। प्रथम दिन तो हमने खूब आनंद व मजे लिए। और रात के लिए हमनें एक होटल बुक कर लिया था। अच्छे से रात गुजारने के पश्चात हमनें अगली सुबह ऊँट की सवारी करने का निश्चय किया। मैं और परिवार के सभी सदस्य ऊँट पर सवार हो उठे। हमनें ऊँट पर सवारी करते हुए पूरे रेगिस्तान को देखा। परन्तु लौटते समय हमारे साथ एक अविस्मरणीय घटना हुई।

BSER-17/2023

3. घटना का अविस्मरणीय होने का कारण :

जब हम सब ऊँट सवारी कर लौट रहे थे। तब अचानक से मेरा ऊँट पीछे छुट गया और रास्ता भटक जानें के कारण वह मुझे रेगिस्थानी इलाके से दूसरे देश 'पाकिस्तान' ले गया। जैसे ही हमने पाकिस्तान देश की सीमा के भीतर पहुंच पाकिस्तानि पुलिस ने हमें दूसरे मुलक से आया हुआ आतंकवादी घोषित कर दिया। जिसके कारण मुझे पाकिस्तानी पुलिस ने अपने ऑडर में ले लिया। मेरे परिवार वाले व साथी सब मेरी तलाश में लगे हुए थे। परन्तु जब उन्हें पता चला कि मैं पाकिस्तानी मुलक में आ पहुँचा हूँ तो उन्होंने भारत सरकार से बहुत निवेदन करवाया कि मुझे छोड दिया जाए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

५. उपसंहार :

इस यात्रा के दौरान मुझे समझ आ गया कि यात्रा करते समय अत्यंत सावधानी रखनी चाहिए नहीं तो फिर तुम्हे व तुम्हारे परिवार को कष्ठ हो सकता है। निरन्तर परिवार के आग्रह करने पर भी पाकिस्तानी पुलिस ने मुझे छोड़ने से साफ मना कर दिया। परंतु एक दिन एक बड़े ऑफिसर ने मुझसे सारी बात पूछी और मेरी पूर्णत तालाशी भी की। तब मेरी जेब पर्स निकला और उसमे मेरी पिताजी की तस्वीर थी। उन्होने तस्वीर देखकर मुझसे पूछा कि यह कौन है? मैंने बताया कि यह मेरे पिताजी श्री जयन्ती लाल दूबे है। इतना सुनकर वह मुझे पहचान गए और पाकिस्तानी पुलिस से कहकर मुझे छुड़वा दिया। शायद मेरे पिताजी ने कुछ अच्छे कर्म किए होंगे जिनके कारण मैं लौट पाया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर क्रमांक - १९

अर्जुन
रामगढ़, जयपुर
१२ मार्च २०२५

प्रिय मित्र राकेश,
सप्रेम नमस्ते।
मुझे जानकर अत्यन्त खुशी हुई कि तुम अब मैट्रिक पास कर कॉलेज में जा रहे हो। अब तुम अपने जीवन की सफलता के प्रति कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। इसी के साथ तुम्हें नियमित रूप से अनुशासन का पालन करना पड़ेगा। इसके लिए तुम्हें सदैव बड़ो की आज्ञा का पालन एवं अपने गुरुजनों द्वारा दिया गया मार्गदर्शन का पालन करना पड़ेगा। तुम्हें यदि जीवन में सफलता को प्राप्त करना है तो तुम्हें 'अनुशासन के महत्व' को जानना पड़ेगा। जो व्यक्ति अपने जीवन अनुशासन का पालन नहीं करता ऐसा व्यक्ति अत्यधिक गुणी होने पर भी सफलता प्राप्त नहीं करना सकता। इसलिए तुम्हें अपने जीवन में यदि कुछ हासिल करना है। तो तुम्हें परिश्रम व अनुशासन का पालन करना आवश्यक है। इसी के साथ मैं तुम्हे व तुम्हारे माता पिता को सहप्रेम प्रणाम करता हूँ।

तुम्हारा प्रिय मित्र
अर्जुन

५

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर क्रमांक - १० [विज्ञापन]

हल्के फुल्के पापड़

1kg पापड़ पर 30% छूट

* महिला उद्यमिता केन्द्र द्वारा बनाए गए पापड़।
* हमारे यहाँ चावल, सूजी, आटे आदि सामग्री के पापड़ बनाए जाते हैं।
* हमारे पापड़ बिलकुल हल्के हैं इनमें किसी भी प्रकार तेल नहीं है।
* यह पापड़ स्वास्थय के लिए लाभदायक है। साथ ही इनको खाने से किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं होगी।

मालवी नगर के निकट
अलवर, [राजस्थान]

संपर्क सूत्र:
0010101010

4

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-17/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 17N2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSEB 176/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-175/2023

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-175/2023